2 कारक तथा विभक्ति

'क्रियान्वययित्वं कारकत्वम्' क्रिया से जिसका सम्बन्ध हो, उसे कारक कहते हैं अर्थात् कारक उस वस्तु को कहा जाता है जिसका अन्वय साक्षात् या असाक्षात् रूप से, वाक्य की क्रिया से हो। यथा– ''वन में आकर राम ने सीता के लिए लंका में रावण को बाण से मारा था।''

इस वाक्य में क्रिया को सम्पादित करनेवाला 'राम' 'कर्त्ता' है। क्रिया का प्रभाव जिस पर पड़ता है वह 'कर्म' है। 'मारना' क्रिया का प्रभाव 'रावण' पर पड़ता है वह 'कर्म' है। क्रिया के साधन में अत्यधिक सहायक 'करण' कहलाता है, यहाँ 'बाण' करण है। सीता के लिए 'रावण' मारा गया, अतः 'सीता' 'सम्प्रदान', 'वन' 'अपादान', लंका में क्रिया पूर्ण हुई थी, अतः लंका 'अधिकरण' कारक है। इस वाक्य में वन, राम, सीता, लंका, रावण इन सभी शब्दों का मारना क्रिया के सम्पादन में साक्षात् या असाक्षात् रूप से उपयोग है, अतः ये सभी कारक कहे जायँगे। इस प्रकार क्रिया के सम्पादन में ये छह सम्बन्ध होते हैं, इन्हीं सम्बन्धों को प्रकट करने के लिए कारकों का प्रयोग होता है तथा इन्हीं अर्थों में प्रथमा आदि विभक्तियाँ प्रयुक्त होती हैं।

➨ कारक के चिह्न

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथमा	कर्त्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पंचमी	अपादान	से (अलग होना)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, की, के; रा, री, रे
सप्तमी	अधिकरण	में, पे, पर
प्रथमा	सम्बोधन	भो, हे, अरे

विभिन्न सूत्रों के आधार पर कारकों एवं विभक्तियों का ज्ञान

प्रथमा विभक्ति

नियम 1–'स्वतन्त्रः कर्त्ता'– क्रिया करने में जिसकी स्वतन्त्रता मानी जाय वही कर्त्ता होता है।
यथा– सोहनः पठति। यहाँ सोहन कर्त्ता है।
वाक्य में कर्त्ता की स्थिति के अनुसार संस्कृत में वाक्य तीन प्रकार के होते हैं :
(क) कर्त्तृवाच्य – मोहनः पठति। यहाँ कर्त्ता की प्रधानता होती है और उसमें प्रथमा विभक्ति होती है।
(ख) कर्मवाच्य – मोहनेन पठ्यते। यहाँ कर्म की प्रधानता होती है और कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है।
(ग) भाववाच्य – रामेण पठ्यते। यहाँ भाव की ही प्रधानता होती है और कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है।
नियम 2– 'प्रातिपदिकार्थ लिङ्ग परिमाण वचन मात्रे प्रथमा'– इस सूत्र में प्रत्येक पद के साथ शब्द का सम्बन्ध है,

अतः केवल प्रातिपदिक अवस्था में किसी शब्द का नियम अर्थ बताने के लिए अथवा केवल लिंग मात्र का बोध कराने के लिए अथवा परिमाण मात्र बताने के लिए अथवा वचन मात्र बताने के लिए प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है।

प्रातिपदिक का अर्थ है– सार्थक शब्द। प्रत्येक शब्द स्वभावतः अपना कुछ निश्चित अर्थ अवश्य रखता है, जो कि प्रातिपदिकार्थ कहलाता है, किन्तु इस अर्थ को भी प्रकट करने के लिए उस सार्थक शब्द के आगे प्रथमा विभक्ति का प्रयोग करना पड़ता है, क्योंकि संस्कृत वैयाकरणों की मान्यता के अनुसार कोई भी सार्थक शब्द तब तक प्रयोगार्ह नहीं बन सकता, जब तक कि उसके आगे कोई-न-कोई विभक्ति, प्रत्यय न लगा दिया जाय।

लिङ्गमात्रे प्रथमा– 'लिङ्गमात्राधिक्ये प्रथमा' अर्थात् प्रातिपदिकार्थ के बिना केवल लिंग का बोध नहीं हो सकता, अतः जब किसी प्रातिपदिकार्थ में लिंगमात्र का बोध रेखांकित करना हो तब प्रथमा विभक्ति होती है।

यथा–

(1) तटः – प्रातिपदिक पुंल्लिंग
(2) तटी – प्रातिपदिक स्त्रीलिंग
(3) तटम् – प्रातिपदिक नपुंसकलिंग

परिमाणमात्रे प्रथमा – 'परिमाणमात्राधिक्ये प्रथमा' प्रातिपदिक के साथ जब परिमाण मात्र की अधिकता हो तो प्रथमा विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। यथा – द्रोणोव्रीहिः – यहाँ द्रोण का अर्थ माप है और व्रीहि वह पदार्थ है जिसको मापा गया है।

वचनमात्रे प्रथमा – केवल वचन का बोध कराने के लिए प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा– एकः, द्वौ, बहवः।

द्वितीया विभक्ति

नियम 1. कर्तुरीप्सिततमं कर्म – कर्त्ता का क्रिया से सबसे अधिक चाहा हुआ कारक 'कर्म' कहलाता है। यथा– राम कलम से पत्र लिखता है (रामः कलमेन पत्रं लिखति)।

इस वाक्य में कर्त्ता (राम) अपनी क्रिया (लिखना) के लिए पत्र को चाहता है; अतः 'पत्र' कर्म है।

ध्यातव्य – यद्यपि लिखने के लिए राम कलम को भी चाहता है। किन्तु कलम का काम तो पेन्सिल भी कर सकती है, सबसे अधिक चाह 'पत्र' की होती है, अतः 'पत्र' कर्म है।

नियम 2. कर्मणि-द्वितीया – कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है, यथा–

रामः **गृहं** गच्छति।	—	राम घर जाता है।
छात्रः **विद्यालयं** गच्छति।	—	छात्र विद्यालय जाता है।
रामः **पत्रं** लिखति।	—	राम पत्र लिखता है।
अहं **जलं** पिबामि।	—	मैं जल पीता हूँ।
ते **फलानि** खादन्ति।	—	वे फल खाते हैं।
सः **नगरं** गच्छति।	—	वह नगर जाता है।

नियम 3. अकथितं च — निम्नलिखित 16 धातुएँ द्विकर्मक धातु हैं। इनके प्रयोग में अपादानादि कारकों में भी द्वितीया विभक्ति होती है। धातुयें निम्नलिखित हैं–

धातु	**प्रयोग**	**हिन्दी अर्थ**
दुह् (दुहना)	धेनुं दुग्धं दोग्धि।	गाय से दूध दुहता है।
याच् (माँगना)	हरिः बलिं वसुधां याचते।	हरि बलि से पृथ्वी माँगता है।
पच् (पकाना)	तण्डुलान् ओदनं पचति।	चावलों से भात पकता है।
दण्ड् (दण्ड देना)	चौरं शतं दण्डयति।	चोर से सौ रुपये दण्ड लेता है।
रुध् (रोकना)	राजा शत्रून् दुर्गं रुणद्धि।	राजा शत्रुओं को किले में रोकता है।
प्रच्छ् (पूछना)	गुरुः शिष्यं प्रश्नं पृच्छति।	गुरु शिष्य से प्रश्न पूछता है।
चि (चुनना)	वृक्षं फलानि अवचिनोति।	वृक्ष से फल चुनता है।
ब्रू (बोलना-कहना)	गुरुः शिष्यं धर्मं ब्रूते।	गुरु शिष्य को धर्म बताता है।
शास् (उपदेश देना)	गुरुः शिष्यं धर्मं शास्ति।	गुरु शिष्य को धर्म का उपदेश देता है।

जि (जीतना)	देवदत्तः शतं जयति।	देवदत्त से सौ जीतता है।
मथ् (मथना)	सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति।	अमृत के लिए समुद्र को मथता है।
मुष् (चुराना)	यज्ञदत्तं शतं मुष्णाति।	यज्ञदत्त से सौ चुराता है।
नी (ले जाना)	स धेनुं ग्रामं नयति।	वह गाय को गाँव में ले जाता है।
हृ (हरना)	स धेनुं ग्रामं हरति।	,,
वह् (ले जाना)	स धेनुं ग्रामं वहति।	,,
कृष् (खींचना-ले जाना)	स धेनुं ग्रामं कर्षति।	,,
याच् (माँगना)	नृपं क्षमां याचते।	राजा से क्षमा माँगता है।

नियम 4. अधिशीङ्स्थासां कर्म— शी (सोना), स्था (ठहरना), आस् (बैठना) इन धातुओं के पूर्व यदि 'अधि' उपसर्ग जुड़ा हो तो इनके आधार की कर्म संज्ञा होती है (कर्म में द्वितीया); यथा—

राजा सिंहासनम् अधितिष्ठति।	राजा सिंहासन पर बैठता है।
हरिः वैकुण्ठम् अध्यास्ते।	हरि बैकुण्ठ में बैठते हैं।
शिष्यः आसनं अधितिष्ठति।	शिष्य आसन पर बैठता है।
मुनिः शिलां अधिशेते।	मुनि शिला पर सोता है।
स पर्यंकम् अधिशेते।	वह पलंग पर सोता है।

नियम 5. अभितः परितः समया निकषा हा प्रति योगेऽपि — अभितः (आस-पास), परितः (सब ओर), समया (निकट), निकषा (निकट) हा तथा प्रति शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है; यथा—

बुभुक्षितं न प्रतिभाति किञ्चित्।	भूखे को कुछ प्रतिभासित नहीं होता।
रामो गुरुं प्रति श्रद्धधाति।	राम गुरु को श्रद्धा करता है।
ग्रामं अभितः वनमस्ति।	गाँव के आसपास वन है।
लंका निकषा हनिष्यति।	लंका के निकट मारेगा।
विद्यालयं परितः वृक्षाः सन्ति।	विद्यालय के चारों ओर वृक्ष हैं।
आश्रमम् अभितः वनम्।	आश्रम के आस-पास वन हैं।
ग्रामं परितः उपवनानि सन्ति।	गाँव के सब ओर उपवन हैं।
लंका समया (निकषा) सागरः।	लंका के निकट सागर है।
हा कृष्णाभक्तम्!	कृष्ण के अभक्त के विषय में खेद है।
नगरं प्रति गच्छति।	नगर की ओर जाता है।
नदीं उभयतः वृक्षाः सन्ति।	नदी के दोनों ओर वृक्ष हैं।

नियम 6. कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे— यदि किसी काल में कोई क्रिया लगातार हो अथवा अध्व (रास्ते की दूरी) में कोई वस्तु लगातार हो तो उस काल तथा अध्ववाचक शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—

क्रोशं गिरिः वर्तते।	कोस भर पर्वत है।
सः मासं अधीते।	वह माह भर पढ़ता है।
सः मासमधीते रामायणम्।	वह महीने भर रामायण पढ़ता है।
क्रोशं कुटिला नदी।	कोस तक नदी टेढ़ी है।
स सप्ताहं पठिष्यति।	वह सप्ताह भर पढ़ेगा।
क्रोशद्वयं वनम् अस्ति।	दो कोस तक वन है।

तृतीया विभक्ति

नियम 1. साधकतमं करणम् — क्रिया की सिद्धि में सबसे अधिक जो कारक उपकारक होता है, उसे करण कहते हैं; यथा— काम को करने में हाथ सबसे अधिक सहायक है; अतः हाथ करण है। यथा— स हस्तेन वितरति मधुरं मिष्ठान्नं।

नियम 2. कर्तृकरणयोस्तृतीया— अनुक्त कर्त्ता अर्थात् कर्मवाच्य के कर्त्ता और करण में तृतीया विभक्ति होती है; यथा—

कुठारेण वृक्षं छिनति।	कुल्हाड़ी से वृक्ष को काटता है।
रामेण बालिः हतः।	राम के द्वारा बालि मारा गया।
रामः दण्डेन सर्पं हन्ति।	राम डंडे से साँप को मारता है।
त्वं कलमेन पत्रं लिख।	तू कलम से पत्र लिख।
मोहनः दात्रेण लुनाति।	मोहन हँसिए से काटता है।

नियम 3. सहयुक्तेऽप्रधाने — सह, साकम्, सार्धम् (सहार्थक) शब्दों के योग में अप्रधान में तृतीया विभक्ति होती है; यथा—

पिता पुत्रेण सह मेरठ नगरम् गतः।	पिता पुत्र के साथ मेरठ नगर को गया।
रामो जानक्या सह गच्छति।	राम जानकी के साथ जाता है।
रामेण सह सीतालक्ष्मणौ वनं गतौ।	राम के साथ सीता और लक्ष्मण वन गये।
मोहनः गुरुणा सह विद्यालयं गच्छति।	मोहन गुरु के साथ विद्यालय जाता है।
लक्ष्मणेन सह रामः गच्छति।	लक्ष्मण के साथ राम जाता है।

इसी प्रकार सहार्थक-शब्दों के योग में तृतीया—

बालकैः सार्धम् सः पठति।	बालकों के साथ वह पढ़ता है।
गोपालेन साकं राधा आगच्छति।	गोपाल के साथ राधा आती है।
श्यामेण सह राधा नृत्यति।	श्याम के साथ राधा नाचती है।
गोपालेन सह शीला दुग्धं पिबति।	गोपाल के साथ शीला दूध पीती है।

नियम 4. पृथग्विना नानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम् — पृथक्, बिना, नाना शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग विकल्प से होता है। तृतीया न हो तो पञ्चमी अथवा द्वितीया विभक्ति होती है; यथा—

जलेन बिना न जीवति कमलम्।	जल के बिना कमल जीवित नहीं रहता है।
ग्रामेण पृथक् या ग्रामात् पृथक्।	गाँव से अलग।
रामेण बिना या रामात् बिना।	राम के बिना।

नियम 5. येनांगविकारः — शरीर के जिस अंग के विकार से शरीरधारी का विकार समझा जाय, उस अंगवाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है; यथा—

अक्ष्णा काणः।	आँख से काना।
हस्तेन लुञ्जः।	हाथ से लुंज।
शिरसा खल्वाटः।	सिर से गंजा।
कर्णाभ्यां बधिरः।	कानों से बहरा।

कारक एवं विभक्ति पर आधारित प्रश्नों के हल

पयसा **ओदनं** भुङ्क्ते।	ओदनं	द्वितीया	कर्तुरीप्सिततमं कर्म
देवदत्तः **गां** पयः दोग्धि।	गां	द्वितीया	दुह्याच्दण्डरुध,
मासमधीते।	मासम्	द्वितीया	कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे
वैकुण्ठमधिशेते विष्णुः।	वैकुण्ठम्	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासांकर्म
छात्राः **अध्यापकं** परितः तिष्ठन्ति।	अध्यापकं	द्वितीया	अभितः परितः समया
सः **कर्णाभ्यां** बधिरोऽस्ति।	कर्णाभ्यां	तृतीया	येनाङ्गविकारः
माता **तण्डुलान्** ओदनं पचति।	तण्डुलान्	द्वितीया	दुह्याच्पच्दण्ड,
लक्ष्मणेन सह सीता अपि गतवती।	लक्ष्मणेन	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
भूपतिः **सिंहासनम्** अध्यास्ते।	सिंहासनम्	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासां कर्म
गुरुणा सह शिष्यः अपि आगच्छति।	गुरुणा	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने

छात्रः **विद्यालयं** गच्छति।	विद्यालयं	द्वितीया	गमने द्वितीया
परिचारकः **कर्णाभ्याम्** बधिरो अस्ति।	कर्णाभ्याम्	तृतीया	येनांगविकारः
विद्यालयं परितः वृक्षाः सन्ति।	विद्यालयं	द्वितीया	अभितः, परितः, समया
सः **अक्ष्णा** काणः अस्ति।	अक्ष्णा	तृतीया	येनांगविकारः
पुत्रेण सह आगतः पिता।	पुत्रेण	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
गुरुणा सह शिष्यः समागताः।	गुरुणा	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
बलिं याचते वसुधाम्।	बलिं	द्वितीया	अकथितं च
क्रोशं कुटिला नदी।	क्रोशं	द्वितीया	कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे
नगरम् **अजां** नेष्यति।	अजां	द्वितीया	अकथितम् च
श्यामः शय्यामधिशेते।	शय्याम्	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासां कर्म
विद्यालयं परितः उद्यानमस्ति।	विद्यालयं	द्वितीया	अभित, परितः, समया, निकषा, हा
गोपालः गां पयः दोग्धि।	गां	द्वितीया	अकथितं च
कुमारः शय्यामधिशेते।	शय्याम्	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासां कर्म
रमेशः अक्ष्णा काणः।	अक्ष्णा	तृतीया	येनांगविकारः
हरिः बैकुण्ठम् अधितिष्ठति।	बैकुण्ठम्	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासां कर्म
ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते।	विषं	द्वितीया	अकथितं च
कन्याम् अभिक्रुध्यति माता।	कन्याम्	द्वितीया	अकथितं च
गृहम् उभयतः वृक्षाः शोभन्ते।	गृहम्	द्वितीया	अभितः परितः समयाः
जटाभिस्तापसः।	जटाभिः	तृतीया	साधकतमंकरणम्
ग्रामं परितः वृक्षाः सन्ति।	ग्रामं	द्वितीया	अभितः परितः समया
विष्णुः वैकुण्ठम् उपवसति।	वैकुण्ठम्	द्वितीया	स्थासां कर्म
अन्तरेण हरिं न सुखम्।	हरिं	द्वितीया	पृथग्विनानानाभि
उपाध्यायं धर्मं पृच्छति।	उपाध्यायं	द्वितीया	अकथितं च
पद्भ्यां पङ्गुः।	पद्भ्यां	तृतीया	येनाङ्गविकारः
गां दोग्धि पयः।	गां	द्वितीया	अकथितं च
आसनम् अध्यास्ते।	आसनम्	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासां कर्म
ग्रामं परितः वनं अस्ति।	ग्रामं	द्वितीया	अभितः परितः समया
अधिशेते वैकुण्ठं विष्णुः।	वैकुण्ठं	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासां कर्म
पादेन खञ्जः।	पादेन	तृतीया	येनाङ्गविकारः
ग्रामम् अभितः वनम् अस्ति।	ग्रामम्	द्वितीया	अभितः परितः समया
ग्रामम् उभयतः उद्यानानि सन्ति।	ग्रामम्	द्वितीया	अभितः परितः समया
ग्रामम् अभितः नदी अस्ति।	ग्रामम्	द्वितीया	अभितः, परितः, समया, निकषा हा प्रतियोगे द्वितीया।
मासम् अधीते माणवकः।	मासम्	द्वितीया	कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे
शिरसा खल्वाटोऽयम्।	शिरसा	तृतीया	येनांगविकारः
लङ्कां परितः समुद्रोऽस्ति।	लङ्कां	द्वितीया	अभितः परितः समया
पुत्रेण सहागतः पिता।	पुत्रेण	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
प्रयागं प्रति जनानां श्रद्धा अस्ति।	प्रयागं	द्वितीया	अभितः परितः प्रतियोगे द्वितीया
हरिं भजति।	हरिं	द्वितीया	अकथितं च

मोहनः पादेन खञ्जः।	पादेन	तृतीया	येनाङ्गविकारः
सः कन्दुकेन सह क्रीडति।	कन्दुकेन	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
हरिः वैकुण्ठम् अधिशेते।	वैकुण्ठम्	द्वितीया	स्थासां कर्म
शशिना सह कौमुदी राजते।	शशिना	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
कन्याम् अभिक्रुध्यति माता।	कन्याम्	द्वितीया	अकथितं च
गृहम् परितः वृक्षाणि शोभन्ते।	गृहम्	द्वितीया	अभितः परितः समया...
नृपं क्षमां याचते।	नृपम्	द्वितीया	अकथितं च।
श्यामः नेत्रेण काणः।	नेत्रेण	तृतीया	येनांगविकारः...
मातुलेन सह आगतः।	मातुलेन	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
लुब्धकाः वृक्षम् आरोहन्ति।	वृक्षम्	द्वितीया	
रामं विना सुखं नास्ति।	रामं	द्वितीया	पृथग्विना नानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम्
परितः कृष्णं गोपाः।	कृष्णं	द्वितीया	अभितः परितः समया निकषा हा प्रतियोगेऽपि
गोपः गां पयः दोग्धि।	गां	द्वितीया	अकथितं च
अभितः कृष्णम्।	कृष्णम्	द्वितीया	अभितः परितः समया निकषा हा प्रतियोगेऽपि
पित्रा सह गतः।	पित्रा	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
क्षीरनिधिं सुधां मथ्नाति।	क्षीरनिधिं	द्वितीया	अकथितं च
अधिवसति वैकुण्ठं हरिः।	वैकुण्ठम्	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासां कर्म
रामेण बाणेन हतो बाली।	बाणेन	तृतीया	कर्तृकरणयोस्तृतीया
दण्डेन घटः।	दण्डेन	तृतीया	
अक्ष्णा काणः।	अक्ष्णा	तृतीया	येनाङ्गविकारः

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **'दशरथेन प्राणाः त्यक्ताः' वाक्य के 'प्राणाः' पद में विभक्ति, वचन है–**
   (क) प्रथमा बहुवचन (ख) द्वितीया बहुवचन (ग) तृतीया एकवचन (घ) द्वितीया बहुवचन
   उत्तर – (क) प्रथमा बहुवचन।
2. **'गुरुः शिष्यं पाठयति' इस वाक्य के शिष्यं पद में विभक्ति है–**
   (क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) प्रथमा (घ) चतुर्थी
   उत्तर – (क) द्वितीया।
3. **'भवन्तमन्तरेण कीदृशः अस्या रागः' इस वाक्य के भवन्तं पद में विभक्ति है–**
   (क) द्वितीया (ख) प्रथमा (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी
   उत्तर – (क) द्वितीया।
4. **'मोहनः अक्ष्णा काणः अस्ति'–इस वाक्य में 'अक्ष्णा' पद में विभक्ति है–**
   (क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पञ्चमी
   उत्तर – (ख) तृतीया।
5. **'देवदत्तेन ग्रामः गम्यते' इस वाक्य के 'ग्रामः' पद में विभक्ति है–**
   (क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) सप्तमी (घ) कोई नहीं
   उत्तर – (क) प्रथमा।

6. **'सः जटाभिस्तापसः प्रतीयते'– इस वाक्य के 'जटाभिः' पद में कौन-सी विभक्ति है?**
(क) तृतीया (ख) द्वितीया (ग) पञ्चमी (घ) कोई नहीं
उत्तर – (क) तृतीया।

7. **'इदम् मया श्रूयते' इस वाक्य में प्रयुक्त 'इदम्' पद में विभक्ति है–**
(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी
उत्तर – (क) प्रथमा।

8. **'क्रोशं गिरिः' में क्रोशं में विभक्ति है–**
(क) तृतीया (ख) द्वितीया (ग) पञ्चमी (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ख) द्वितीया।

9. **'विद्यालयं परितः वृक्षाः सन्ति' इस वाक्य में 'विद्यालयं' पद में कौन-सी विभक्ति है?**
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पञ्चमी
उत्तर – (क) द्वितीया।

10. **'प्रजापतेः' लोकः जायते' इस वाक्य में 'प्रजापतेः' पद में विभक्ति है–**
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी (ग) पंचमी (घ) इनमें कोई नहीं
उत्तर – (क) तृतीया।

11. **सः <u>कर्णाभ्याम्</u> बधिरोऽस्ति।**
(क) तृतीया द्विवचन (ख) द्वितीया द्विवचन (ग) सप्तमी एकवचन (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (क) तृतीया द्विवचन।

12. **'नमः शिवाय' इस वाक्य के 'शिवाय' पद में कौन सी विभक्ति है?**
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी (ग) पंचमी (घ) षष्ठी
उत्तर – (ख) चतुर्थी।

13. **'विष्णुः क्षीरसागरम् अधिशेते' इस वाक्य में 'क्षीरसागरम्' पद में कौन-सी विभक्ति है?**
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (क) द्वितीया।

14. **'सः पादेन खञ्जः अस्ति' इस वाक्य के 'पादेन' पद में निम्नलिखित में से कौन सी विभक्ति है?**
(क) प्रथमा (ख) तृतीया (ग) सप्तमी (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ख) तृतीया।

15. **'सुरेशः शिरसा खल्वाटोऽस्ति' इस वाक्य के 'शिरसा' पद में विभक्ति है–**
(क) चतुर्थी (ख) तृतीया (ग) षष्ठी (घ) द्वितीया
उत्तर – (ख) तृतीया।

16. **'भारवाहकः हस्ताभ्याम् भारमुत्थापयति' इस वाक्य के 'हस्ताभ्याम्' पद में विभक्ति एवं वचन है–**
(क) तृतीया एकवचन (ख) चतुर्थी द्विवचन (ग) पञ्चमी द्विवचन (घ) तृतीया द्विवचन
उत्तर – (घ) तृतीया द्विवचन।

17. **'सः अक्ष्णा काणः अस्ति'–इस वाक्य के 'अक्ष्णा' पद में कौन-सी विभक्ति है?**
(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ग) तृतीया।

18. **'विष्णवे नमः'–इस वाक्य के 'विष्णवे' पद में कौन-सी विभक्ति है?**
(क) षष्ठी (ख) चतुर्थी (ग) तृतीया (घ) द्वितीया
उत्तर – (ख) चतुर्थी।

19. 'बालकः कर्णाभ्यां बधिरोऽस्ति'–इस वाक्य में 'कर्णाभ्यां' पद में विभक्ति, वचन बताइए–

(क) तृतीया द्विवचन (ख) चतुर्थी एकवचन (ग) पंचमी एकवचन (घ) सप्तमी एकवचन

उत्तर – (क) तृतीया द्विवचन।

20. 'नवीनः प्रकृत्या दयालुः' वाक्य में 'प्रकृत्या' पद में प्रयुक्त विभक्ति-वचन है–

(क) द्वितीया एकवचन (ख) तृतीया एकवचन (ग) पञ्चमी द्विवचन (घ) तृतीया बहुवचन

उत्तर – (ख) तृतीया एकवचन।

21. 'राजा सिंहासनमधिशेते' इस वाक्य में 'सिंहासनम्' पद में कौन-सी विभक्ति है?

(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर – (क) द्वितीया।

22. 'सः कर्णेन वधिरः' वाक्य के 'कर्णेन' पद में विभक्ति है–

(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) पञ्चमी

उत्तर – (ग) तृतीया।

23. 'स्वस्ति भवते' वाक्य के 'भवते' पद में विभक्ति है–

(क) षष्ठी (ख) द्वितीया (ग) चतुर्थी (घ) तृतीया

उत्तर – (ग) चतुर्थी।

24. 'पुण्येन दृष्टो हरिः' इस वाक्य में 'पुण्येन' पद में कौन-सी विभक्ति है?

(क) चतुर्थी (ख) पञ्चमी (ग) तृतीया (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर – (ग) तृतीया।

25. 'अजां नेष्यति' इस वाक्य में 'अजां' पद में कौन-सी विभक्ति है?

(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी

उत्तर – (ख) द्वितीया।

26. 'लवणं विना भोजनं न स्वादु'–इस वाक्य में 'लवणं' में विभक्ति है–

(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) सम्बोधन (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर – (ख) द्वितीया।

27. 'ग्रामम् अभितः नदी' इस वाक्य के 'ग्रामम्' पद में कौन-सी विभक्ति है?

(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी

उत्तर – (ख) द्वितीया।

28. 'रमेशः शय्यामधिशेते।' वाक्य में 'शय्याम्' में कर्मकारक संज्ञा किस सूत्र से हुई है?

(क) अकथितञ्च (ख) कर्तुरीप्सिततमं कर्म

(ग) अधिशीङ्स्थासां कर्म (घ) कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे

उत्तर– (ग) अधिशीङ्स्थासां कर्म।

29. 'पिता पुत्रेण सह गच्छति' इस वाक्य में 'पुत्रेण' पद में कौन-सी विभक्ति है–

(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पञ्चमी

उत्तर– (ख) तृतीया।

30. 'जटाभिः तापसः' में 'जटाभिः' पद में विभक्ति है–

(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पञ्चमी

उत्तर– (ख) तृतीया।

●●